International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 121-126
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-11-2016
Accepted: 16-12-2016

डॉ. विजय गर्ग
सहायक आचार्य हिन्दू महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence
डॉ. विजय गर्ग
सहायक आचार्य हिन्दू महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नारी-सौन्दर्य की वर्णना में अर्थालंकारों की भूमिका (धनपाल कृत तिलकमञ्जरी के संदर्भ में)

डॉ. विजय गर्ग

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस समाज में व्यवहार का आदान-प्रदान भाषा के माध्यम से होता है। सामान्य भाषा के द्वारा अर्थग्रहण भी सामान्य होता है। जब इसी भाषा को कवि अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है तो यह सामान्य न रहकर विशेष हो जाती है। कवि का वर्णनीय वर्णना विशेष से पुरस्कृत होता है जिससे अर्थ सौंदर्य की उत्पत्ति होती है। काव्य की इस विशेषता को अभिव्यक्त करने में अनेक तत्त्वों की भूमिका होती है यथा – गुण, अलंकार, रीति, वृत्ति आदि। काव्य के सौंदर्यवर्धन में इन सभी तत्त्वों की अलग-अलग भूमिका होती है।

भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा में सौंदर्य काव्य का अभिन्न अंग है। कवि सौंदर्य से अभिभूत होकर–चाहे वह भौतिक सौंदर्य हो, घटना विशेष का सौंदर्य हो या अनुभूत भावों का सौंदर्य - काव्याभिव्यक्ति के लिए प्रेरित होता है। वह जिस सौंदर्य को आत्मसात करता है, उसे अपनी प्रतिभा व कल्पनाशक्ति से अनुप्राणित कर नवीन सृष्टि की रचना करता है। इन अनेकानेक रमणीय व कमनीय विषयों में नारी- सौंदर्य का अप्रतिम स्थान है। धनपाल ने भी तिलकमञ्जरी में नारी- सौंदर्य को अपना विशिष्ट विषय बनाया है। स्वयं कृति का शीर्षक इस का ज्वलंत प्रमाण है। वहाँ धनपाल की नायिका तिलकमञ्जरी हो अथवा पताका-नायिका मलयसुन्दरी या कोई अन्य नारी पात्र, सबके सौन्दर्य को शब्द देना महाकवि का परम धर्म प्रतीत होता है। काव्य की कमनीयता और रमणी की रमणीयता के अभिवर्धन के हेतु अलंकार होते हैं जो यथास्थान आकर सौन्दर्य की वृद्धि करते हैं। तिलकमञ्जरी में प्रमुख नारी पात्र हैं-धनपाल की नायिका तिलकमञ्जरी, पताका नायिका मलयसुंदरी, मेधवाहन की पत्नी मदिरावती, कांची नरेश कुसुमशेखर की रानी गंधर्वदत्ता, मलयसुंदरी की सखी बंधुसुंदरी आदि। इन्हीं नारी पात्रों की सौन्दर्य-वर्णना में अर्थालंकारों का विवेचन किया जा रहा है।

तिलकमञ्जरी

तिलकमञ्जरी इस रसमयी प्रेमकथा की नायिका है। यह विद्याधर सम्राट् चक्रसेन की पुत्री है। पूर्व जन्म में यह ज्वलनप्रभ नामक वैमानिक की पत्नी और देवी लक्ष्मी की सखी थी। इसका नाम प्रियंगु सुंदरी था। यह अद्वितीय तथा अनिंद्य सुंदरी है। ऐसी सुंदरी के कथा प्रसंग में आने पर उसके परम सौंदर्य का उद्घाटन अवश्यंभावी है।

तिलकमञ्जरी का प्रथम उल्लेख चित्रदर्शन में हुआ है, जब गंधर्वक तिलकमञ्जरी का चित्र लेकर राजकुमार हरिवाहन के समक्ष उपस्थित होता है। इसके चित्र को देखते ही हरिवाहन अनायास कह उठता है-

अत्युत्कृष्टरूपां रूपिणीमिव भगवतो मन्मथस्य जयघोषणाम्।

अत्यंत उत्कृष्ट सौंदर्य वाली तिलकमञ्जरी साक्षात् कामदेव की जय घोषणा है। यहाँ कवि का उत्प्रेक्षा अलंकार से विशेष प्रयोजन है। कामदेव की जय घोषणा से तात्पर्य है कि यह संपूर्ण जगत के हृदय को जीतने की क्षमता रखती है। इस चित्रदर्शन से हरिवाहन जो अभी तक प्रेम- व्यापार से अनभिज्ञ है, उसके हृदय में कामदेव ने अपना स्थान बना लिया है। कहा भी गया है-

प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।

चित्र दर्शन के पश्चात् जब हरिवाहन को तिलकमञ्जरी के अनुपम सौंदर्य को प्रत्यक्ष करने का अवसर मिलता है तो उसका हृदय तिलकमञ्जरी के सौंदर्य के अनुकूल उपमानों को ग्रहण करने में असमर्थ होता हुआ संदेहग्रस्त प्रतीत होता है-

ग्रहकवलनाद् भ्रष्टा लक्ष्मीः किमृक्षपतेरियं, मदनचकितापक्रान्ताऽब्धेरुतामृतदेवता।
गिरीशनयनोदर्चिर्दग्धान्मनोभवपादपाद्, विदितमथवा जाता सुभ्रूरियं नवकन्दली॥

यह सुन्दर भौहों वाली, क्या राहुग्रह के ग्रस लेने के कारण अध्ः च्युत चन्द्रमा की शोभा है अथवा मन्थन से चकित समुद्र से निकली अमृत की देवी है, अथवा शिवजी की नेत्राग्नि से भस्म कामदेवरूपी वृक्ष से उत्पन्न नवकन्दली है। यहाँ सन्देह अलंकार का प्रयोग तिलकमञ्जरी के सौन्दर्यातिशय को पुष्ट कर रहा है।

धनपाल ने उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग कर तिलकमञ्जरी के सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन किया है-

जानीथ श्रुतशालीनौ खलु युवामावां प्रकृत्यर्जुनी, त्रैलोक्ये वपुरीदृगन्ययुवतेः संभाव्यते किं क्वचित्?
एतत् प्रष्टुमपास्तनीलनलिनश्रेणीविकासश्रिणी, शंकेऽस्याः समुपागते मृगदृशः कर्णान्तिकं लोचने॥

कान और आँख आपस में वार्तालाप कर रहे हैं- आँख कह रही है-हम तो स्वभाव से ही सरल हैं और आप (कान) निश्चय ही शास्त्रश्रवण से शालीन हैं क्या तुम जानते हो कि तीनों लोकों में इस तरुणी से अतिरिक्त अन्य युवती का ऐसा सुन्दर शरीर हो सकता है? मानो इसी जिज्ञासा को शांत काने के लिए नीलकमल की पंक्ति की विकासशोभा को तिरस्कृत करने वाले इस मृगलोचना के नेत्र कानों के पास पहुँच गये हैं।

यह उत्प्रेक्षा सर्वोत्कृष्ट है। नेत्रों के विस्तार के विषय में धनपाल की कल्पना है कि वे कानों से प्रश्न पूछने के कारण ही इस विस्तार को प्राप्त हुई हैं।

तिलकमञ्जरी के सौन्दर्य के कारण ही लतामण्डप की शोभा है। उसके चले जाने पर लतामण्डप ऐसा हो गया जैसे जैसे चंद्रमा की चांदनी से रहित प्रदोष-समय, जैसे अमृत निकला हुआ समुद्र, जैसे बिना ध्वजा के प्रासाद का शिखर, जैसे गगन मार्ग में उड़ गए अतएव हंसों की श्रेणी से रहित कमलवन-

नष्टसकलपूर्वशोभं निशामुखमिवास्तमितशशिलेखम्, उदधिजलमिवोद्धृतसुधम्, सौधशिखरम् इवापनीतपताकम्, कमलखण्डमिवोड्डीनहंसमालम्।

अर्थापत्ति अलंकार तिलकमञ्जरी की प्रमुख चारित्रिक विशेषता को पुष्ट करता है-

ननु स्वप्नेऽपि पुरुषसन्निधिमभिलषति। तिलकमञ्जरी स्वप्न में भी पुरुष सानिध्य की इच्छा नहीं करती। जब वह स्पप्न में भी पुरुष सम्पर्क नहीं चाहती, तो 'जागृतावस्था में विचार भी नहीं करेगी' इस अर्थान्तर का बोध होता है।

मदिरावती

यह सम्राट मेघवाहन की पत्नी है और हरिवाहन की माता है। इसका स्वभाव अत्यंत कोमल और व्यवहार सरल है। यह अत्यधिक रूपवती है। धनपाल ने इसके सौंदर्य की उपमा द्वितीया के चंद्रमा से दी है, जो निरंतर उन्नतिशील और श्लाधनीय प्रकाश वाला है-

सकलभुवनाभिनन्दितोदय द्वितीयाशशिकलेव द्वितीया|

सम्पूर्ण भुवन के द्वारा श्लाघित प्रकाश वाले द्वितीया तिथि के चन्द्रमा के समान श्लाघित उन्नति वाली मेघवाहन की पत्नी (द्वितीया) थी।

धनपाल ने मदिरावती को कामदेव के कमनीय स्थल के समान बताया है। जिससे इसमें मेघवाहन के दृढ प्रेम का ज्ञान होता है-

मदनविलास कलहंसमानसेनेव महतामाहितप्रमोदा मानसेन।

मदिरावती के सौन्दर्य- वर्णन के लिए कवि ने अनेक उत्प्रेक्षाओं के प्रयोग से ऐसा प्रतीत होता है जैसे कवि को संतुष्टि नहीं हो पा रही है इसलिए उसने उत्प्रेक्षाओं का लगातार प्रयोग किया है। उत्प्रेक्षाएँ तो काव्य का प्राण है कवि कल्पना-सागर से उत्प्रेक्षा रूपी मोतियों को लाता है और वर्णन विशेष में पिरो देता है

भाग्यसम्पत्तिरिव सौभाग्यस्य, पुयपरिणतिरिव लावण्यस्य, संकल्पसिद्धिरिव संलल्पयोनेः, सर्वकामावाप्तिरिव कमनीयतायाः, निःस्यन्दधारेव शृंगारसुधाभृंगारस्य ।

काव्य सौन्दर्य की भाग्यसमृद्धि सी, लावण्य के पुण्यफल सी, इच्छायोनि (कामदेव) की इच्छापूर्ति सी, कमनीयता की संपूर्ण इष्टसिद्धि सी, शृंगाररसरूपी सुधा के सुवर्णमय जलपात्र की निरंतर बहती धारा सी।

रूपक अलंकार का प्रयोग कर धनपाल ने मदिरावती के सौन्दर्य को और अधिक निखार दिया है-

रंगशाला रागशैलूषस्य, ज्येष्ठवर्णिका रूपजातरूपस्य, अम्भोजिनी विभ्रमभ्रमराणाम्, शरत्कालागति केलिकलहंसीनाम्, वशीकरणविद्या मदनमहावार्तिकस्य.....।

मदिरावती स्नेहरूपी नर्तक की नाट्यशाला, स्वरूपात्मक सुवर्ण की श्रेष्ठ लेखनी, विलासरूपी भ्रमरों की कमलिनी, क्रीड़ारूपी कलहसों का शरत्कालीन मनोहरगति, मदनरूपी महावार्तिक की वशीकरण विद्या थी।

धनपाल ने मदिरावती के सहज सौंदर्य का वर्णन करते हुए इसकी चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन में विरोधाभास अलंकार के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न किया है-

परां कोटिमारूढा स्वामिभावस्य सर्वदासत्त्वे स्थिता, असत्यमुक्ता स्वप्नेSपि अजातस्वैरिणीसंगा निरपत्या सततमुत्सगेन लालितापत्या ।

स्वामित्व के उत्कर्ष को प्राप्त होने पर भी सभी के दास रूप में स्थित (विरोध परिहार- सदा सत्व में स्थित), दुराचारिणीयों के साथ होने पर स्वप्न में स्वेच्छारिणीयों की संगति (विरोध परिहार- असत्य से रहित होने के कारण स्वप्न में भी स्वेच्छारिणीयों की संगति से रहित), सन्तान रहित होने पर भी गोद में सन्तान का पालन करने वाली (विरोध परिहार- पति के द्वारा अंक में पालित)।

मलयसुन्दरी

यह काञ्चीनरेश की पुत्री है। इसकी माता का नाम गन्धर्वदत्ता है। यह अत्यधिक रूपवती है । पूर्वजन्म में इसका नाम प्रयंवदा था पूर्वजन्म के संस्कार के कारण ही यह समर्केतु को देखते ही उसके प्रेमपाश में बँध जाती है| यह तिलकमञ्जरी की प्रिय सखी है। धनपाल ने उत्प्रेक्षा अलंकार में मलयसुन्दरी के सौंदर्य का वर्णन किया है-

शब्दविद्यामिव विद्यानाम्, कैशिकीमिव रसवृत्तिनाम्, उपजातिमिव छन्दोजातिनाम्, जातिमिवालंकृतीनाम्,

वैदर्भीमिव रीतिनाम्, प्रसत्तिमिव काव्यगुणसंम्पदां पञ्चमश्रुतिमिव गीतीनाम्, रसोक्तिमिव भणितीनाम्.....।

हरिवाहन ने चौदह विद्याओं में व्याकरण विद्या के समान, रसवृत्तियों (भारती-सात्वती-आरभटी-कैशिकी) में कैशिकी के समान, छंद सामान्य के मध्य उपजाति छंद के समान, अलंकारों में जाति नामक अलंकार के समान, रीतियों में वैदर्भी के समान, काव्यगुण संपत्ति के मध्य प्रसादरूपोत्तम गुण के समान, स्वरों में पंचम स्वर्ग के समान, वाणी में रसोक्ति के समान मलयसुन्दरी को देखा। इसमें मलयसुन्दरी की उत्कृष्टता का वर्णन है। यह अत्यधिक सौंदर्य से युक्त वर्णन है। उत्प्रेक्षा अलंकार के प्रयोग से यह वर्णन अत्यधिक प्रभावोत्पादक बन गया है।

हरिवाहन ने व्यतिरेक और उत्प्रेक्षा अलंकार के द्वारा मलयसुन्दरी के सौंदर्य को प्रकट किया है-

दत्तं पत्रं कुवलयततेरायतं चक्षुरस्याः कुम्भवैभौ कुचपरिकरः पूर्व पक्षीकरोति ।
दन्तच्छेदच्छविमनुवदत्यच्छता गण्डभित्तेश्चान्द्रं बिम्बं द्युतिविलसितैर्दूषयत्यास्यलक्ष्मीः।।

"इस कन्या के दीर्घ नेत्र नीलकमलदल को पत्र समर्पित करते हैं, स्तन विस्तार हाथी के मस्तक को तिरस्कृत करता है, कपोल स्थल की कान्ति हाथी के दाँतों की कान्ति को पाण्डुवर्णी करती है, मुखमण्डल की शोभा चमकते चन्द्र बिम्ब को दूषित करती है।"

यहाँ उपमेय नेत्र, स्तन, कपोल स्थल व मुखमण्डल का उपमान नीलकमल, हस्ती मस्तक, दाँत व चन्द्र बिम्ब से उत्कृष्ट रूप में वर्णन किया गया है, जिससे काव्यसौन्दर्य में वृद्धि हो रही है।

अस्या नेत्रायुगेन नीरजदलस्रगदामदैर्ध्यद्रुहा चंचत्पार्वणचन्द्रमण्डलरुचा वक्त्रारविन्देन च ।
स्वामालोक्य दृशं रुचं च विजितां तुल्यं त्रापाबाध्तिैर्बद्धा निर्जनसंचरेषु कमलैर्मन्ये वनेषु स्थितिः ।।

मानता हूँ कि इस कन्या के कमल दल की माला की दीर्घता को तिरस्कृत करने वाले नेत्रायुगल व उद्यत पूर्णिमा के चन्द्रबिम्ब के समान कान्ति युक्त मुखारविन्द से तिरस्कृत मृगों व कमलों के द्वारा अपने नेत्र व छवि को देखकर लज्जा से व्यथित होकर जनशून्य वनों व जल में निवास को स्वीकार किया गया है।

गन्धर्वदत्ता

गन्धर्वदत्ता काञ्चीनरेश कुसुमशेखर की पत्नी और मलयसुन्दरी की माता है। इसका जीवन अनेक प्रकार के आरोह – अवरोहों से भरा हुआ है। यह स्वभाव से धार्मिक है। धनपाल ने स्वभावोक्ति अलंकार में गन्धर्वदत्ता की स्वाभाविक क्रियाओं का वर्णन किया है-

भित्त्वा संपुटमोष्ठयोर्न हसितं निःशंकगोष्ठीष्वपि, भ्रान्तं न त्वरितैः पदैर्गृहनदीहंसानुसारेष्वपि।
सार्धं पञ्जरसारिकाभिरपि नो भूयस्तया जल्पितं, न व्यस्रास्तिलकद्रुमेष्वापि चिरं व्यापारिता दृष्टयः ।।

गन्धर्वदत्ता निःशंक गोष्ठी में भी तेज नहीं हंसती थी, महल के पास में नदी के हंसों का साथ होने पर भी तीव्र नहीं चलती थी, पिंजरे की सारिकाओं के साथ भी अधिक बात नहीं करती थी, तिलक नामक वृक्षों को भी देर तक नहीं देखती थी।

अतिशयोक्ति अलंकार के माध्यम से धनपाल ने गन्धर्वदत्ता के सुन्दर केशपाशों का वर्णन किया है-

यस्यां ललाटे सदृशद्युतित्वादस्पष्टचामीकरपट्टबन्धे ।
अनर्ति सूक्ष्मालकवल्लीराणां मालाऽरिबन्दीव्यजनानिलेन ।।

जिस गन्धर्वदत्ता के मस्तक पर तुल्य कान्ति के कारण अस्पष्ट सुवर्णपट्ट पर सूक्ष्म केशपाशों की माला, कारागार में बंद शत्राओं के व्याज से हिलती थी। कवि का यही प्रयास रहता है कि उक्ति को अधिक-से- अधिक चमत्कारपूर्ण बनाया जाए।

कन्याओं का वर्णन

उत्प्रेक्षा अलंकार के द्वारा विभिन्न देशों की राजकुमारियों के सौन्दर्य की अभिव्यञ्जना करवाई गई है-

अतिभास्वरतया कार्तस्वरपताका इव पातालादुद्यतरविरथोल्लसिता विद्युत इवोदधिजलमवगाहमानैर्घनैरपघनेभ्यो विश्लेषिताः, दिव्यौषधीरिव मथनोत्थितस्यधन्वन्तरेर्विस्मृताः, कल्पलता इव पारिजातजन्मभूमिमवलोकयितुममरकाननादागताः, दीधितीरिवास्तसमये गभस्तिमालिनो विगलिताः, कनककमलिनीमृणालिका इवानिर्वाणसुरवारणकवलदानार्थमिन्द्राधोरणैरुपसंगृहीताः .....कन्यकाः झगीत्यद्राक्षम्।

अत्यधिक उज्ज्वलता के कारण पाताल से निकलती हुई रवि के रथ पर उल्लसित सुवर्णपताका के समान, समुद्र में प्रवेश किए हुए मेघों से अपने शरीर से मुक्त विद्युत लता के समान, सागर के मंथन सके कारण धन्वंतरि की विस्मृत दिव्य औषधियों के समान, पारिजात वृक्ष की जन्मभूमि को देखने आई नंदनवन की कल्प लता के समान, अस्त काल में भ्रष्ट सूर्य की कान्ति सी, स्नान रहित मदमस्त इंद्र के गज ऐरावत के कवलदान के लिए (ग्रास समर्पण के लिए) इंद्र के हस्तिपकों के द्वारा संचित स्वर्णकमलिनी की बिसलता के समान कन्याओं को देखा।

अयोध्या की कुलवधुएँ

अर्थापत्ति अलंकार के द्वारा अयोध्या की कुलवधुओं के लज्जा, कोमलता आदि गुणों को प्रकट किया गया है-

शालीनतया सुकुमारतया च कुचकुम्भयोरपि कदर्थ्यमानाभिरुद्धत्या मणिभूषणानामपि खिद्यमानाभिर्मुखरतया रतेष्वपि ताम्यन्तीभिर्वैयात्यपरिग्रहेण स्वप्नेऽप्यलंघयन्तीभिर्द्वारतोरणम्....।

अयोध्या की कुलवधुएँ कुलांगनोचित लज्जा व परमकोमलता के कारण, उन्नत कुचकुम्भों के भार से भी पीड़ित होती थी, मणिभूषणों के कोलाहल से व्यथित होती थी, घृष्टता के कारण प्रिय सम्भोग में भी अरुचि प्रदर्शित करती थी, स्वप्न में भी अन्तःपुर से बाहर नहीं जाती थी।

प्रस्तुत उदाहरण में जब कुचकुम्भों के भार से पीड़ित होती थी तो 'अन्य किसी भार को उठाने में कैसे समर्थ होगी' इस अर्थान्तर का ज्ञान होता है तथा जब स्वप्न में भी अन्तःपुर से बाहर नहीं जाती थी तो 'जागृतावस्था में बाहर कैसे जाएँगी ' इस अर्थान्तर का बोध होता है।

अयोध्या की कुलवधुओं के वर्णन में विरोधभास का चमत्कार द्रष्टव्य है-

अंगीकृतसतीव्रताभिरप्यसतीव्रताभिः...।

"सतीव्रत को अंगीकार कर लेने पर भी असतीव्रता थी।" यहाँ विरोध है परन्तु 'असतीव्रता' का अर्थ 'तीव्रता का न होना' करने पर विरोध हट जाता है।

अयोध्या नगरी

अयोध्या नगरी की नारी रूप में कल्पना की गई है-

विरचितालकेव मखानलधूमकोटिभिः स्पष्टिताञ्जनतिलकबिन्दुरिव बालोद्यानैः, आविष्कृतविलासहासेव दन्तवलभीभिः, आगृहीतदर्पणेव, सरोभिः, सकृत्युगेव सत्पुरुषव्यवहारैः, स्वमकरध्वजराज्येव पुरन्ध्रिबिब्बोकैः सब्रह्मलोकेव द्विजसमाजैः।

यज्ञ का धूम मानों उसके केश थे, तिलक नामक वृक्ष उसके तिलक थे, दन्तवलभी उसके विलासमय हास थे, सरोवर उसके दर्पण थे।

अयोध्या की वारवधुएँ

अव्यापारितमन्त्राभिः सकृदाह्वानेन नरेन्द्राणामपि सर्वस्वमाकर्षयन्तीभिः....।

यहाँ अयोध्या की वार वधुओं का वर्णन किया गया है कि वे बिना विषनिवारणादि मन्त्रों के प्रयोग के, एक बार आह्वान मात्र से ही मन्त्र प्रयोग में पटु वैद्यों के सकल धन को आकृष्ट करके स्वाधीन कर लेती थी। यहाँ विरोध उपस्थित होने पर - "बिना वशीकरण मन्त्र प्रयोग के, एक

बार स्वागत करने मात्रा से नृपों के सर्वस्व को अपने अधीन कर लेती थी अर्थात् अनायास ही राजाओं को अपने वश में कर लेती थी।" अर्थ करने पर विरोध का परिहार हो जाता है।

लक्ष्मी

यहाँ पर लक्ष्मी की उपमा शेषनाग पर स्थित पृथिवी से दी गई है-

विततदलसहस्रफणालयशोभिनि पृथुलदीर्घनालभोगे शेषभुजग इव मेदिनीमिन्दुकरपाण्डुरत्विषि पुण्डरीके कृतावस्थानम्।

विस्तृत व सहस्रफणावलय से सुशोभित लम्बे मृणालदण्ड से युक्त चन्द्रमा की पाण्डुवर्ण की कान्ति वाले कमल पर अवस्थित लक्ष्मी शेषनाग पर स्थित पृथिवी के समान लग रही थी।

यहाँ लक्ष्मी उपमान, पृथ्वी उपमेय, कान्ति समान धर्म तथा इव उपमा वाचक शब्द है। इन का शब्दशः कथन होने के कारण श्रौती पूर्णोपमा है।

इस विवेचना से यह स्पष्ट है कि महाकवि धनपाल के प्रिय अलंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास तथा परिसंख्या आदि हैं। महाकवि के ये विविध अलंकार नारी की सौन्दर्य-लक्ष्मी के समाराधन को समर्पित हैं। तिलकमञ्जरी का आद्यन्त अवलोकन करने पर यह भली-भांति द्योतित होता है कि नारी-सौन्दर्य की वर्णना को धनपाल द्वारा विहित अर्थालंकारों की सृष्टि ने अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है। इस विषय में उनके सकल अलंकारों में से भी उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास तथा परिसंख्या अलंकारों की भूमिका सर्वातिशायिनी है।